A Pratibha Spandan Journal
SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)
This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना परम्परा का ऐतिहासिक एवं समकालीन अध्ययन

Mohit Tiwari
Researcher, Tilak Dhari College, Jaunpur, Uttar Pradesh
Dr. Subas C. Bisoi
Professor, Tilak Dhari College, Jaunpur, Uttar Pradesh

Read the Article Online
OPEN ACCESS
Published on 30 April, 2026

सार
यह शोध-पत्र भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना परम्परा के ऐतिहासिक विकास, संरचनात्मक विशेषताओं तथा समकालीन स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की मूल आधारशिला गुरु-शिष्य परम्परा रही है, जिसके अंतर्गत घराना प्रणाली का उद्भव और विकास हुआ। घराना केवल एक पारिवारिक परम्परा नहीं, बल्कि एक विशिष्ट सांगीतिक शैली, दृष्टिकोण और प्रस्तुति पद्धति का प्रतिनिधित्व करता है।इस अध्ययन में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक घराना परम्परा के विकास को विभिन्न चरणों में स्पष्ट किया गया है। विशेष रूप से मध्यकाल में, जब संगीत को राजाश्रय प्राप्त हुआ, तब विभिन्न घरानों का संगठित रूप विकसित हुआ। ग्वालियर, किराना, आगरा, जयपुर - अत्रौली तथा पटियाला जैसे प्रमुख घरानों की विशिष्टताओं का विश्लेषण यह दर्शाता है कि प्रत्येक घराना अपनी अलग शैली, राग-विस्तार, लयकारी और भाव-अभिव्यक्ति के माध्यम से भारतीय संगीत को समृद्ध करता है। शोध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि घराना परम्परा का महत्व केवल सांगीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन का माध्यम है। समकालीन युग में, तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा संस्थागत शिक्षा के प्रभाव से घराना परम्परा में परिवर्तन देखने को मिलते हैं, जिसके कारण विभिन्न घरानों के बीच समन्वय की प्रवृत्ति बढ़ी है। हालाँकि, इस परम्परा के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे— गुरु-शिष्य परम्परा का क्षीण होना, व्यावसायिकता का प्रभाव और युवाओं की घटती रुचि। इसके बावजूद, यदि आधुनिक तकनीक और पारम्परिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, तो घराना परम्परा का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल हो सकता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि घराना परम्परा भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा है, जो इसकी निरंतरता, विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
सूचक शब्द: *भारतीय शास्त्रीय संगीत, घराना परम्परा, गुरु-शिष्य परम्परा, खयाल गायकी, ध्रुपद परम्परा, राग, सांगीतिक शैली, सांस्कृतिक विरासत, संगीत शिक्षा, वैश्वीकरण।*

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व की उन प्राचीनतम और सुव्यवस्थित कला परम्पराओं में से एक है, जिसकी जड़ें वैदिक काल तक गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह केवल ध्वनि या मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, दर्शन, आध्यात्मिकता और जीवन-दृष्टि का एक सशक्त प्रतिबिम्ब भी है। भारतीय संगीत की संरचना राग, ताल, स्वर, लय, श्रुति एवं भाव जैसे सूक्ष्म और वैज्ञानिक तत्वों पर आधारित है, जो इसे अन्य विश्व संगीत परम्पराओं से विशिष्ट बनाते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इस की परम्परागत निरंतरता है, जो हजारों वर्षों से बिना टूटे आज तक चली आ रही है। इस निरंतरता को बनाए रखने में "गुरु-शिष्य परम्परा" का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी गुरु-शिष्य परम्परा के भीतर विकसित हुई एक प्रमुख और विशिष्ट प्रणाली है— घराना परम्परा, जिसने भारतीय संगीत को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उसे विविधता, गहराई और सौंदर्य भी प्रदान किया। 'घराना' शब्द की व्युत्पत्ति 'घर' से मानी जाती है, जिसका सामान्य अर्थ परिवार, वंश या परम्परा होता है। परन्तु संगीत के संदर्भ में यह शब्द केवल पारिवारिक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट सांगीतिक शैली, विचारधारा और प्रस्तुति पद्धति का द्योतक है। जब कोई महान गुरु या संगीतज्ञ अपनी साधना, अनुभव और रचनात्मकता के आधार पर एक विशेष शैली का विकास करता है और उसके शिष्य उस शैली को अपनाकर आगे बढ़ाते हैं, तब एक "घराना" अस्तित्व में आता है।

घराना परम्परा के अंतर्गत संगीत की शिक्षा केवल तकनीकी प्रशिक्षण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह एक जीवन - पद्धति के रूप में विकसित होती है। शिष्य अपने गुरु के सान्निध्य में रहकर न केवल राग-रचना, आलाप, तान और बंदिशों का अभ्यास करता है, बल्कि वह संगीत के सौंदर्यबोध, भावाभिव्यक्ति, अनुशासन और साधना के महत्व को भी आत्मसात करता है। इस प्रकार घराना परम्परा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का संचार भी है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में विभिन्न घरानों ने अलग - अलग शैलीगत विशेषताओं को विकसित किया है, जिसके कारण संगीत में विविधता और समृद्धि का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। उदाहरणतः किसी घराने में स्वर की शुद्धता और विस्तार पर बल दिया जाता है, तो किसी में लयकारी और तानों की जटिलता पर; कहीं भाव-अभिव्यक्ति प्रमुख होती है, तो कहीं तकनीकी कौशल। यही विविधता भारतीय संगीत को एक जीवंत और गतिशील कला बनाती है। इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो घराना

परम्परा का वास्तविक विकास मध्यकाल, विशेषतः मुगल काल में हुआ, जब संगीत को राजाश्रय प्राप्त हुआ और विभिन्न दरबारों में संगीतज्ञों ने अपनी विशिष्ट शैलियाँ विकसित कीं। समय के साथ ये शैलियाँ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और संगीत परिवारों से जुड़कर घरानों के रूप में स्थापित हुईं। ग्वालियर, किराना, आगरा, जयपुर-अत्रौली और पटियाला जैसे प्रमुख घरानों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। समकालीन युग में, जहाँ एक ओर वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और संस्थागत शिक्षा के कारण संगीत के स्वरूप में परिवर्तन आया है, वहीं दूसरी ओर घराना परम्परा की मूल भावना अभी भी जीवित है। आज के कलाकार एक ओर पारम्परिक शैली को संरक्षित रखते हैं, तो दूसरी ओर विभिन्न घरानों की विशेषताओं का समन्वय कर नई प्रयोगशीलता भी अपनाते हैं। इस प्रकार घराना परम्परा स्थिर न होकर एक गतिशील और विकसित होती हुई प्रणाली के रूप में सामने आती है। हालाँकि, वर्तमान समय में इस परम्परा के सामने अनेक चुनौतियाँ भी उपस्थित हैं, जैसे— गुरु - शिष्य परम्परा का क्षीण होना, व्यावसायिकता का बढ़ता प्रभाव, तथा युवाओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति घटती रुचि। इसके बावजूद, अनेक संगीतज्ञ और संस्थाएँ इस परम्परा के संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि घराना परम्परा केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैलीगत व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह उसकी आत्मा, पहचान और सांस्कृतिक धरोहर का आधार है। इस शोध - पत्र का उद्देश्य इसी परम्परा के ऐतिहासिक विकास, संरचनात्मक विशेषताओं और समकालीन स्वरूप का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है, ताकि इसके महत्व को सम्यक रूप से समझा जा सके।

घराना परम्परा का ऐतिहासिक विकास

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना परम्परा का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जो विभिन्न कालखंडों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के साथ विकसित होती रही। यद्यपि 'घराना' शब्द का प्रचलन अपेक्षाकृत बाद में हुआ, किन्तु इसकी मूल भावना प्राचीन काल से ही विद्यमान थी। इस विकास को मुख्यतः तीन चरणों में समझा जा सकता है—प्राचीन काल, मध्यकाल तथा उत्तर मध्यकाल (खयाल युग)।

(क) प्राचीन काल में आधारभूत स्वरूप

भारतीय संगीत की उत्पत्ति का उल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है, विशेषतः सामवेद में, जहाँ संगीत का प्रारंभिक रूप धार्मिक अनुष्ठानों एवं यज्ञों के संदर्भ में मिलता है। उस समय संगीत का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नयन और देवताओं की उपासना था। इस काल में 'घराना' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता, किन्तु गुरु-शिष्य परम्परा का स्पष्ट अस्तित्व था। संगीत की शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी, जिसे "श्रुति परम्परा" कहा जाता है। प्रत्येक गुरु की अपनी शैली, स्वर प्रयोग और प्रस्तुति पद्धति होती थी, जो उनके शिष्यों द्वारा अपनाई जाती थी। यही व्यक्तिगत शैलीगत भिन्नताएँ आगे चलकर घराना परम्परा के रूप में विकसित हुईं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में घरानों का बीज रूप विद्यमान था, भले ही उसका औपचारिक नामकरण न हुआ हो।

(ख) मध्यकाल में घराना परम्परा का विकास

घराना परम्परा का वास्तविक और संगठित विकास मध्यकाल में हुआ, विशेषतः मुगल काल में, जब संगीत को राजाश्रय प्राप्त हुआ। इस समय संगीतज्ञों को राजदरबारों में संरक्षण मिला, जिस से उन्हें अपनी कला को विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ। मुगल सम्राट अकबर के दरबार में महान गायक तानसेन का विशेष स्थान था। उन्होंने न केवल ध्रुपद गायकी को उच्च स्तर तक पहुँचाया, बल्कि अनेक रागों का विकास भी किया। तानसेन की परम्परा से अनेक संगीत शैलियाँ विकसित हुईं, जिन्होंने आगे चलकर विभिन्न घरानों का रूप लिया।इस काल में संगीतज्ञ विभिन्न दरबारों—जैसे ग्वालियर, आगरा, जयपुर, लखनऊ आदि, में निवास करते थे। प्रत्येक दरबार की अपनी सांस्कृतिक विशेषताएँ थीं, जिनका प्रभाव संगीत की शैली पर भी पड़ा। फलस्वरूप, विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग गायकी शैलियाँ विकसित हुईं, जो बाद में घरानों के रूप में स्थापित हुईं।

(ग) ध्रुपद परम्परा और बानी प्रणाली

मध्यकाल में ध्रुपद गायकी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। ध्रुपद को भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीन और गंभीर शैली माना जाता है। इस शैली में अनुशासन, गंभीरता और आध्यात्मिकता का विशेष महत्व होता है।

ध्रुपद गायकी में चार प्रमुख "बानी" (शैली) प्रसिद्ध थीं—

- गौहर बानी
- खंडार बानी
- नौहार बानी
- डागर बानी

प्रत्येक बानी की अपनी विशिष्ट गायकी शैली थी, जैसे—स्वर प्रयोग, आलाप की विधि, लय का उपयोग आदि। यही बानियाँ आगे चलकर घराना परम्परा की आधारशिला बनीं। विशेष रूप से डागर बानी आज भी ध्रुपद परम्परा में जीवित है और एक विशिष्ट घराने का रूप ले चुकी है।

(घ) खयाल गायकी का उदय और घरानों का विस्तार

18वीं शताब्दी मेंखयाल गायकी का उदय हुआ, जिसने भारतीय संगीत में एक नया मोड़ लाया। खयाल शैली ध्रुपद की अपेक्षा अधिक लचीली, भावप्रधान और कल्पनाशील होती है। इसमें कलाकार को रचनात्मक अभिव्यक्ति की अधिक स्वतंत्रता मिलती है।खयाल के विकास के साथ-साथ विभिन्न घरानों का तीव्र विस्तार हुआ। अलग-अलग संगीतज्ञों और उनके शिष्यों ने अपनी-अपनी विशिष्ट शैली विकसित की, जिससे घराना परम्परा और अधिक स्पष्ट एवं संगठित हो गई।इसी काल में ग्वालियर, किराना, आगरा, जयपुर-अत्रौली और पटियाला जैसे प्रमुख घरानों का उद्भव हुआ। प्रत्येक घराने ने अपनी अलग गायकी शैली विकसित की, जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत में विविधता और समृद्धि का विस्तार हुआ।

(ङ) भौगोलिक एवं पारिवारिक आधार पर घरानों का निर्माण

घरानों का निर्माण केवल शैलीगत आधार पर ही नहीं, बल्कि भौगोलिक और पारिवारिक आधार पर भी हुआ। कई घराने विशेष नगरों या क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं, जैसे—

- ग्वालियर घराना
- आगरा घराना
- जयपुर-अत्रौली घराना

इसके अतिरिक्त, कई घराने विशिष्ट संगीत परिवारों से भी संबंधित हैं, जहाँ संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता रहा। इस प्रकार घराना परम्परा में क्षेत्रीयता और वंशानुगतता दोनों का समन्वय देखने को मिलता है।

(च) आधुनिक युग की ओर संक्रमण

19वीं और 20वीं शताब्दी में, जब संगीत राजदरबारों से निकलकर सार्वजनिक मंचों और संस्थानों तक पहुँचा, तब घराना परम्परा में भी परिवर्तन आने लगे। संगीत शिक्षा का प्रसार हुआ और घरानों की सीमाएँ कुछ हद तक लचीली हो गईं।फिर भी, इस ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया ने यह सिद्ध किया कि घराना परम्परा केवल एक शैलीगत प्रणाली नहीं, बल्कि एक जीवंत और विकसित होती हुई सांस्कृतिक धरोहर है, जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत को निरंतर समृद्ध किया है।

प्रमुख घराने और उनकी विशेषताएँ

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना परम्परा के अंतर्गत अनेक घरानों का विकास हुआ, जिनमें प्रत्येक की अपनी विशिष्ट गायकी शैली, सौंदर्य दृष्टि तथा प्रस्तुति पद्धति है। इन घरानों ने न केवल संगीत को विविधता प्रदान की, बल्कि उसे समृद्ध और बहुआयामी भी बनाया। नीचे प्रमुख घरानों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत है—

ग्वालियर घराना

ग्वालियर की प्रतिष्ठा सांगीतिक केंद्र के रूप में बहुत पहले से ही थी I ध्रुपद गायन शैली का विकास और प्रसार में जिस राजा का योगदान सबसे अधिक माना जाता वह राजा मानसिंह तोमर ग्वालियर के ही महाराज थे I पुनः सिंधिया राजवंश के आश्रय में ग्वालियर की संगीतिक आभा पुनः लौटी I महाराज दौलत राव सिंधिया ने अपने कार्यकाल में संगीत के प्रोत्साहन लिए अनेक प्रयास किया I जिसका परिणाम यह हुआ की एक समुचित वातावरण मिलने पर देश के विभिन्न स्थानों से संगीतकार ग्वालियर की ओर आकर्षित हुए तथा पुनः ग्वालियर संगीत के बहुत अच्छे केंद्र के रूप में जाना जाने लगा I इसी पलायन के क्रम में लखनऊ से नत्थन पीर बख्श ग्वालियर पहुंचे I यह समय ऐसा था जब ध्रुपद गायन शैली के स्थान पर धीरे-धीरे ख्याल गायन शैली का प्रचार बढ़ रहा था I नत्थन पीर बख्श की गायन शैली मुख्य रूप से ख्याल पर आधारित थी, किंतु इस गायन में ध्रुपद जैसी गंभीरता और ठहराव दिखता था I लयकारियां भी ध्रुपद एवं धमार के समान ही थी I कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि यह ख्याल गायन में ध्रुपद की झलक दिखती थी I नत्थन पीर बख्श की ख्याल गायन शैली पूरी तरह अनुशासित थी, इसी कारण उनकी शैली को प्रमाणिक तथा घरानेदार गायकी कहा गया I नत्थन पीर बख्श को ध्रुपद गायन में भी महारत हासिल थी I इसके अतिरिक्त उन्हें टप्पा गायन में भी प्रवणता प्राप्त थी I ध्रुपद एवं टप्पा में प्रवीण गायक नत्थन पीर बख्श की घरानेदार ख्याल गायन शैली में ध्रुपद और टप्पा का स्पष्ट प्रभाव दिखता था I नत्थन पीर बख्श ने अपने इस नव सृजित ख्याल गायन शैली की शिक्षा अपने पौत्र हस्सू खां, हद्दू खां को और अपनी पुत्री के पुत्र नत्थू खां को दी I अपने दादाजी और नाना जी से मूल गायन शैली के शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह तीनों ही कलाकार उस्ताद बड़े मोहम्मद खान की बलदार और पेचीदा तानों को अपने गायन में समाहित किया I जिससे इस गायन शैली में एक नूतन आकर्षण दिखा I हस्सू खां, हद्दू खां तथा नत्थू खां के गायन में पुरुषत्व का दर्शन होता था I यह गायन सिद्धांतों पर आधारित अनुशासित एवं मर्यादित था।

ग्वालियर घराने में स्वर का लगाव खुला तथा जोरदार होता है I इस घराने में गायक को अपने स्वर को छुपाना अथवा दबाना पूर्णत वर्जित है I गायक द्वारा आवाज की जोरदार लगाव के कारण ही इस घराने की गायकी को मर्दाना गायकी कहा जाता है I इस घराने में स्वर की साधना पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है I इस घराने के गायकों की आवाज को इस प्रकार तैयार किया जाता है कि वह तीनों सप्तकों में सहजता से घूम सके I सबसे पहले स्वर की साधना कराई जाती है, इसके पश्चात ही तान और आलाप की शिक्षा दी जाती है I आलाप के साथ बड़े दाने, छोटे दाने तथा गमक की तानों का अभ्यास कराया जाता है I इस घराने की गायकी की एक और बड़ी अच्छी विशेषता है कि किसी भी राग के बंदिश के अस्थाई तथा अंतरा को पूरा गाने के बाद राग की बढ़त की जाती है I इस घराने में मुख्य रूप से विलंबित लय के ख्याल को गाते हुए कभी भी लय को अति विलंबित नहीं किया जाता है I इस घराने में समान्यतः पहले बड़ा ख्याल और बाद में छोटा ख्याल प्रस्तुत किया जाता है छोटा ख्याल की प्रस्तुति के बाद अष्टपदी, भजन या तराना प्रस्तुत किया जाता है और इसके बाद गायन की पूर्णता होती है। यह गायन शैली सर्वमान्य सिद्धांतों पर आधारित है I इस घराने की परंपरागत बंदिशों से ध्रुपद अंग स्पष्ट दिखता है। ग्वालियर घराने की परंपरागत बंदिशों में इस प्रकार का गढ़न है की स्थाई तथा अंतर के गायन मात्र से ही राग का स्वरूप स्थापित हो जाता है I ग्वालियर घराने में गायन की प्रस्तुति के समय वाणी एवं मुद्रा की शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाता है I अत्यंत कठिन गायन शैली होने के बाद भी इस घराने के कलाकारों के शरीर अथवा मुख पर कोई प्रतिकूलता नहीं दिखती है I इस गायन शैली में इतना लोच है की गायक घरानेदार अथवा परंपरागत चीजों की प्रस्तुति करते हुए भी अपनी कल्पना शीलता को विस्तार दे सकता है I यह गायन शैली शास्त्रोक्त होने के साथ ही मनोरंजन भी है अपने इन्हीं अनेकानेक गुणों के कारण ग्वालियर घराने की शैली लोकप्रिय हुई I इस गायन शैली की प्रस्तुति के समय मुख्य रूप से तबला तथा तानपुरा संगत वाद्य के रूप में होते हैं I इसके अतिरिक्त हारमोनियम की अपेक्षा सारंगी अथवा वायलिन जैसे वाद्यों को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि यह वाद्य गायन के अनेक अंगों के अत्यंत सहजता से प्रदर्शित कर सकते हैं। इस घराने की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- सरल एवं स्पष्ट राग प्रस्तुति — राग को बिना अत्यधिक जटिलता के, सीधे और व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।
- बंदिश प्रधान शैली — बंदिशों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है और उन्हीं के आधार पर राग का विस्तार किया जाता है।
- मध्यम लय का प्रयोग — गायकी प्रायः मध्यम गति में होती है, जिससे श्रोता को राग का सौंदर्य स्पष्ट रूप से अनुभव होता है।
- तान का संतुलित प्रयोग — तानों में न तो अत्यधिक जटिलता होती है और न ही अत्यधिक सजावट, बल्कि संतुलन बना रहता है।

2. किराना घराना

भारतीय शास्त्रीय संगीत में किराना घराना एक विशिष्ट स्थान रखता है I इस घराने का आरंभ सुप्रसिद्ध बीनकार तथा ध्रुपद गायक उस्ताद बंदे अली खान जो कि ग्वालियर घराने के सुप्रसिद्ध गायक उस्ताद हद्दू खान के दामाद थे, से माना जाता है I परंतु किराना घराने की गायकी को प्रतिष्ठा दिलाने का श्रेय उस्ताद अब्दुल करीम खान तथा उस्ताद वाहिद खान को प्राप्त है I कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि किराना घराने के मूल पुरुष नायक घोंडू तथा नायक मन्नू थे I दोनों ही संगीतकार ग्वालियर के महाराजा मानसिंह तोमर के दरबार में नियुक्त थे तथा इन्हें राजाश्रय प्राप्त था I इन्हीं की वंश परंपरा में आगे चलकर उस्ताद अब्दुल करीम खान तथा उस्ताद अब्दुल वाहिद खान का जन्म हुआ I

इस घराने के नामकरण के संदर्भ में विविध मत प्राप्त होते हैं I कुछ विद्वानों का मत है की महाभारत काल के सुप्रसिद्ध धनुर्धर कर्ण की राजधानी कर्णावती नगरी जिसका अपभ्रंश किराना हो गया I इसी आधार पर इस घराने का नाम किराना घराना पड़ा I परंतु कुछ विद्वानों का मत है कि उत्तर भारत में कुरुक्षेत्र के पास एक गांव जिसका नाम कैराना है इसी गांव में उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब का जन्म हुआ I अतः इस गांव के नाम पर इस घराने का नाम पड़ा I उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब भी इसी मत के समर्थन में थे I कुछ विद्वान उक्त दोनों मतों से अलग अपना मत रखते हुए कहते हैं कि उत्तर प्रदेश के कैराना नामक गांव में उस्ताद बंदे अली खान साहब निवास करते थे और चुकी उस्ताद बंदे अली खान को इस घराने के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है I अतः इस घराने का नाम उनके जन्म स्थान करना के नाम पर अपभ्रंश होकर किराना पड़ा I

किराना घराने की गायन शैली में आलाप की प्रधानता दिखती है I इस घराने की गायन शैली को शिष्यों में प्रतिरोपित करते समय सबसे पहले उनके सुरों के सटीक लगाव पर विशेष बल दिया जाता है। हालांकि सभी घरानों की गायन शैली में सुरीलापन अत्यंत आवश्यक है किंतु किराना घराना में सुरीलापन पर विशेष बल दिया जाता है I किराना गायकी में स्वरों के सुरीला होने के साथ ही इसकी कोमलता तथा नाजुक्ता पर भी ध्यान दिया जाता है I इस घराने में अनेक आचार्यों के मुख से एक वाक्यांश सुना जा सकता है और इससे अंदाज लगाया जा सकता है कि स्वर का सटीक लगाव किराना की गायकी के लिए कितना महत्वपूर्ण है I वाक्यांश है – "सुर गया तो सिर गया I" इस घराने में गायन शैली के अंतर्गत सुरीलापन के साथ-साथ आलाप के विविध प्रकारों तथा मीड को अत्यंत सुंदरता से समायोजित किया जाता है I इस घराने में एक जो बहुत महत्वपूर्ण तथ्य दिखता है वह यह है कि एक स्वर से दूसरे स्वर पर पहुंचते समय इतनी सुंदर चिकनाई दिखाई जाती है जो अन्य घरानों में नहीं है I धीमे-धीमे बढ़त करना इस गायन की अनेक विशेषताओं में से एक है I इस घराने में लयकारी तथा बोल उपज लगभग नहीं के बराबर उपयोग में होता है I गायन में लयकारी ना होने से लय तथा ताल का विशेष चमत्कार नहीं दिखाया जाता है I इस गायकी में गायक द्वारा बंदिश के कुछ शब्दों को लेकर बढ़त की जाती है I इस घराने में बड़े ख्याल के लिए अति विलंबित लय का चयन किया जाता है इस लय में विस्तृत आलाप, रेशम के समान अत्यंत

A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)
This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

मुलायम स्वरों में खटके का प्रयोग, स्थान विशेष पर स्वर का संकुचन तथा विस्तार सहज ही श्रोताओं का अंतर्मन छू लेता है। किराना घराने में स्वरों के लगाने की पद्धति अन्य गानों की अपेक्षा बहुत अलग है उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में किराना घराना इकलौता ऐसा घराना है जहां ख्याल के साथ ठुमरी भी सिखाई जाती है। किराना घराना स्वर की शुद्धता और सूक्ष्मता के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है। इस घराने में राग के भावात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया जाता है। इस घराने की मुख्य विशेषताएँ हैं—

- स्वरों की लंबी मींड — एक स्वर से दूसरे स्वर तक अत्यंत कोमल और लंबी मींड का प्रयोग किया जाता है।
- सूक्ष्म आलाप शैली — राग का विस्तार अत्यंत धीमी गति में और सूक्ष्मता के साथ किया जाता है।
- भाव प्रधान गायकी — राग के भाव और रस को प्रमुखता दी जाती है।
- स्वर की मधुरता — गायकी में कोमलता और मधुरता का विशेष महत्व होता है।

3. आगरा घराना

आगरा घराना ध्रुपद परम्परा से प्रभावित खयाल गायकी का एक प्रमुख घराना है। इसकी गायकी में गंभीरता, शक्ति और लयकारी का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में अनेक घरानों के क्रम में आगरा घराने का नाम अत्यंत विशिष्ट स्थान रखता है। इस घराने के मूल पुरुष अकबर के दरबारी गायक उस्ताद हाजी सुजान खान को माना जाता है। इस घराने में ख्याल गायन के साथ ही ध्रुपद गायन एवं धमार गायन को भी विशेष महत्व प्राप्त है। आगरा में अथवा यूँ कहें कि आगरा घराने में ध्रुपद गायन का प्रारंभ दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय से माना जाता है। इस काल में सुप्रसिद्ध गायक गोपाल नायक के चार शिष्य लोहांहंग दास, अलख दास, खलकदास, मलूक दास थे। मलूकदास जी के वंश में सुजान खान का जन्म हुआ, जो अकबर के काल में थे। इसी वंश में आगे चलकर घग्घे खुदा बख्श का जन्म हुआ, जिन्होंने आगरा घराने की ख्याल शैली को प्रचारित किया या ऐसा कह सकते हैं कि आगरा घराने की नींव रखी। इस घराने की गायन शैली के संदर्भ में दो धाराएं प्राप्त होती हैं जिसमें से एक धारा के अंतर्गत ध्रुपद तथा धमार का गायन किया जाता है जबकि दूसरे धारा के अंतर्गत ख्याल गायन प्राप्त होता है। आगरा में ध्रुपद तथा धमार के गायन के घराने को अत्यंत प्राचीन माना जाता है, जबकि ख्याल घराना नया है। घग्घे खुदा बख्श ग्वालियर की ख्याल गायन शैली को सीख कर तथा उसमें आगरा की ध्रुपद एवं धमार शैली को मिलाकर एक नई गायन शैली का विकास किया जो वर्तमान में आगरा घराने की ख्याल शैली के संदर्भ में प्रचार में है।

इस घराने की गायन शैली को स्वतंत्र गायन शैली के रूप में स्वीकार किया जाता है। आगरा घराने में सभी बड़े कलाकारों के गायन को सुनने के पश्चात यह कहा जा सकता है कि सबकी अपनी स्वतंत्र गायन शैली रही है। घग्घे खुदा बख्श के पूर्व आगरा में ध्रुपद तथा धमार का विशेष प्रभाव था किंतु घग्घे खुदा बख्श एवं उनके बाद ख्याल शैली के गायन का प्रचार बढ़ा। अतः ख्याल शैली में भी ध्रुपद के अनेक अंगों का प्रभाव दिखता है। ख्याल गायन शैली में दुगुन, चौगुन, अठगुन आदि लयकारिया, बोल तानें, बोलतानों में तिहाइया आदि ध्रुपद की चीज आगरा के ख्याल शैली को एक नूतन आयाम पर स्थापित करते हैं। इस घराने की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- मजबूत और प्रभावशाली आवाज — गायकी में दमदार और गंभीर स्वर का प्रयोग होता है।
- बोल-तान का प्रयोग — शब्दों (बोल) के साथ तानों का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है।
- लयकारी में निपुणता — जटिल लयकारी और ताल के विविध प्रयोग इस घराने की पहचान हैं।
- ध्रुपद का प्रभाव — गायकी में ध्रुपद शैली की गंभीरता और स्थिरता स्पष्ट दिखाई देती है।

4. जयपुर-अत्रौली घराना

जयपुर-अत्रौली घराना अपनी जटिल राग संरचनाओं और दुर्लभ रागों की प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध है। यह घराना अत्यंत विद्वत्तापूर्ण और गूढ़ शैली का प्रतिनिधित्व करता है। यह घराना उत्तरभारतीय शास्त्रीय संगीत का एक अत्यंत मत्वपूर्ण घराना माना जाता है। इस घराने के प्रणेता के रूप में सुप्रसिद्ध वीणा वादक उस्ताद रजब अली खां को माना जाता है। खां साहब वीणा के हस्तसिद्ध कलाकार होने के साथ ही एक अच्छे गायक भी थे। इसी कारण जयपुर घराने में तत अंग दिखता है। इस घराने के संस्थापक के रूप में जाने जाने वाले उस्ताद अल्लादिया खां अपने जीवन का एक बड़ा समय अतरौली में व्यतीत किया अतः इस घराने को जयपुर घराना, अतरौली घराना तथा अल्लादिया खां का घराना इन तीन नामों से जाना जाता है। तत्कालीन जयपुर नरेश महाराजा मानसिंह के दरबार में जयपुर घराने के उस्ताद मुबारक अली खान तथा उस्ताद अल्लादिया खान को एक साथ राजाश्रय प्राप्त था। दोनों ही कलाकार एक दूसरे की गायन की प्रतिभा से प्रभावित थे। उस्ताद अल्लादिया खान साहब, उस्ताद मुबारक अली खान से संगीत की शिक्षा ग्रहण करना चाहते थे किंतु अनेक कारणों से ऐसा संभव नहीं हो सका। इसके बाद भी अल्लादिया खां के गायन में उस्ताद मुबारक अली खान का प्रभाव दिखता था।

अतरौली घराने में आवाज के लगाव का ढंग अत्यंत सहज एवं स्वाभाविक है I मंद्र, मध्य तथा तार तीनों ही सप्तकों में समान रूप से खुली तथा साफ़ एवं सहज आवाज का लगाव इस घराने की गायन शैली की प्रमुख विशेषताओं में से है I इस घराने में आवाज के आकार युक्त लगाव तथा कंठ की विशेष तैयारी पर बल दिया जाता है I इस घराने में तीनों ही सप्तक में समान रूप से गायन होता है I अतरौली घराने में गायन के समय बंदिश के शब्दों के उच्चारण में कलात्मकता तथा कोमलता को सहज समावेश प्राप्त होता है I इस घराने का गायन अत्यंत व्यवस्थित है I इस घराने के गायक एवं गायिकाओं के द्वारा गायन के समय लय की अत्यंत सूक्ष्म पकड़ को सहज ही अनुभूत किया जा सकता है I यह सूक्ष्म लयात्मकता गायन को अत्यंत विशिष्ट बनाती है I गायन करते हुए बीच में विश्राम भी लयात्मकता को प्रदर्शित करता है I लयात्मकता एवं लयकारियों का आधिक्य होते हुए भी संपूर्ण गायन पर इसका प्रबल प्रभाव नहीं दिखता है I लयात्मकता से इतनी निकटता के बाद भी तबला वादक को स्वतंत्र वादन की स्वतंत्रता नहीं प्रदान की जाती है I उस्ताद अल्लादिया खान का मानना था कि गायन में तबला वादक की स्वतंत्रता प्रस्तुति गायन के उपज पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

अतरौली घराने में प्रायः विलंबित ख्याल में बंदिश के स्थाई को गाकर उसमें आलाप, तान आदि प्रस्तुत कर दिया जाता है तथा इस प्रकार बिना अंतरा गाए ही गायन को पूर्ण कर लिया जाता है I अतरौली घराने में गायन शैली के अंतर्गत बंदिश के गायन के समय राग का विस्तार, बंदिश की बढ़त की अपेक्षा बंदिश में प्रयुक्त शब्दों से की जाती है I आलाप का गायन लयात्मकता से तथा वैचित्र्य पूर्ण ढंग से होता है I विलंबित तथा गमक युक्त आलापचारी, वक्र एवं पेचीदा तान, मुखबंदी ताने, एक ही सांस में एक से अधिक आवर्तन की आलापचारी आदि अतरौली घराने की विशेषताओं में से है I इस घराने में विलंबित खयाल के लिए सामान्यतः तीन ताल का चुनाव किया जाता है I इस घराने के ख्याल गायन में विलंबित आलाप में ध्रुपद अंग स्पष्ट दिखता है I छोटी-छोटी तानों के गढन में ध्रुपद अंग की गमक दिखाई पड़ती है I

आगरा, अतरौली एवं खुर्जा घराने में रोटी - बेटी का संबंध माना जाता है I इन घरानों ने बंदिशे भी साझा की है I अतरौली घराने के गायक सामान्यतः वक्र तथा अप्रचलित रागों जैसे नायकी कान्हड़ा, काफी कान्हड़ा, रायसा कान्हड़ा, खोखर त्रिवेणी, विहागड़ा, जैत श्री, पट मंजरी आदि रागों के गायन में विशेष रूचि लेते हैं I इस घराने में गायन के समय शास्त्रीय मर्यादाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है I इस घराने में सम पर पहुंचने की कला अत्यंत अनूठी है I कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि घराने के संस्थापक उस्ताद अल्लादिया खान ध्रुपद की परंपरागत शिक्षा से प्रभावित होकर इस अनूठी शैली को अंगीकार किया था I आगरा घराने में भी सम पर पहुंचने की पद्धति, अतरौली घराने के आसपास ही है I अतरौली घराने के गायन की शैली बुद्ध की प्रधानता वाली गायन शैली के रूप में मान्यता प्राप्त है I इस घराने में ताल का प्रदर्शन अत्यंत संगठित ढंग से होता है I इस गायन शैली में स्वर की शुद्धता के साथ ही स्वर्ग के माधुर्य तथा सौंदर्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस घराने की विशेषताएँ हैं—

- जटिल एवं दुर्लभ रागों का प्रयोग — ऐसे रागों का गायन जो अन्य घरानों में कम प्रचलित हैं।
- तान और लय का अद्भुत संतुलन — जटिल तानों के साथ लय का सटीक संयोजन।
- गहन राग विस्तार — राग को अत्यंत सूक्ष्म और विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- बौद्धिकता और संरचनात्मकता — गायकी में एक प्रकार की बौद्धिक गहराई दिखाई देती है।

5. पटियाला घराना

पटियाला घराना अपनी चपल, आकर्षक और अलंकारपूर्ण गायकी के लिए प्रसिद्ध है। इसमें तानों की विविधता और गति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस घराने का उद्भव अली बख्श और फतेह अली नाम के दो भाइयों से माना जाता है I जिन्हें आलिया फत्तू भी कहते हैं I यह दोनों ही उस्ताद तानरस खान के शिष्य थे I इनके गायन में ग्वालियर, दिल्ली तथा जयपुर घराने की शैली का सुंदर सम्मिश्रण प्राप्त होता है I पटियाला घराने में स्वर तथा लय को समान महत्व दिया जाता है I इस घराने के गायको की आवाज अत्यंत ही वजनदार होती है I वजनदार आवाज होने के बाद भी यह अत्यंत मुलायम होती है I इस घराने में आवाज के लगाव की स्पष्टता, शुद्धता एवं खुलापन अत्यंत आकर्षक होता है I पटियाला घराने की गायन शैली में भावनात्मकता का प्रबल पक्ष है I इस घराने में गमक अंग के तानों का गायन किया जाता है I इस घराने की तान अतिद्रुत लय में तथा सपाट होती है I पटियाला घराने में पंजाब का टप्पा, सूफी बानी शबद तथा कव्वाली का प्रभाव भी दिखता है I इस घराने की गायन के आरंभ में स्वरों के उच्चारण मात्र से इस घराने की विशेषता स्पष्ट होती है सभी घरानो के गायको में आवाज लगाने का अपना एक विशिष्ट अंदाज होता है I इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह गायक किस घराने से संबंध रखता है I इस घराने की मुख्य विशेषताएँ हैं—

- तेज और चपल तानें — तानों में गति, विविधता और लय का आकर्षक संयोजन।
- मुरकी और खटका का प्रयोग — अलंकारों का अत्यधिक और प्रभावशाली उपयोग।
- हल्की-फुल्की एवं मनोहर गायकी — श्रोता को आकर्षित करने वाली शैली।
- ठुमरी और ग़ज़ल में दक्षता — इस घराने के कलाकार अर्धशास्त्रीय शैलियों में भी निपुण होते हैं।

**घराना परम्परा का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व **

घराना परम्परा का महत्व केवल संगीत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से गहराई से जुड़ी हुई है।

(क) सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण :घरानों ने भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर—संगीत—को सुरक्षित रखा और उसे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया। यह परम्परा सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है।

(ख) क्षेत्रीय पहचान का निर्माण : विभिन्न घराने विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े होते हैं, जिससे वे उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को भी दर्शाते हैं। उदाहरणतः ग्वालियर, आगरा, जयपुर आदि घराने अपने-अपने क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

(ग) सामाजिक संरचना में योगदान : घराना परम्परा ने समाज में गुरु और शिष्य के बीच एक गहरा संबंध स्थापित किया, जो केवल शिक्षा तक सीमित नहीं बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के संचार का माध्यम भी है।

(घ) संगीत को जीवन-पद्धति बनाना : घरानों के माध्यम से संगीत केवल एक कला नहीं रहा, बल्कि यह जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया। इसमें साधना, अनुशासन और समर्पण का विशेष महत्व है।

आधुनिक युग में घराना परम्परा

समकालीन युग में घराना परम्परा में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं, जो सामाजिक, तकनीकी और शैक्षिक विकास के कारण संभव हुए हैं।

(क) शिक्षा पद्धति में परिवर्तन : पूर्वकाल में संगीत शिक्षा केवल गुरु-शिष्य परम्परा तक सीमित थी, किन्तु आज विश्वविद्यालयों, संगीत महाविद्यालयों और संस्थानों के माध्यम से भी संगीत सिखाया जा रहा है। इससे संगीत शिक्षा अधिक सुलभ हुई है।

(ख) घरानों का समन्वय : आधुनिक कलाकार अब केवल एक घराने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे विभिन्न घरानों की विशेषताओं को सीखकर अपनी एक नई मिश्रित शैली विकसित करते हैं।

(ग) तकनीकी विकास का प्रभाव : रिकॉर्डिंग, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट के माध्यम से संगीत का व्यापक प्रसार हुआ है। आज ऑनलाइन माध्यम से भी संगीत सीखा और सिखाया जा रहा है।

(घ) वैश्वीकरण : भारतीय शास्त्रीय संगीत अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे घराना परम्परा को वैश्विक पहचान मिली है और विदेशी श्रोताओं में भी इसकी रुचि बढ़ी है।

समकालीन चुनौतियाँ

आधुनिक युग में घराना परम्परा के सामने कई चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं—

- गुरु-शिष्य परम्परा का धीरे-धीरे कमजोर होना
- व्यावसायिकता का बढ़ता प्रभाव
- युवाओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति घटती रुचि
- घरानों की विशिष्ट पहचान का कम होना

इन चुनौतियों के कारण घराना परम्परा की शुद्धता और मौलिकता पर प्रभाव पड़ रहा है।

भविष्य की संभावनाएँ

यद्यपि चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी घराना परम्परा का भविष्य उज्ज्वल है, यदि इसे आधुनिक संदर्भों के साथ संतुलित किया जाए।

- डिजिटल माध्यमों द्वारा संगीत शिक्षा का विस्तार
- घरानों की परम्पराओं का दस्तावेजीकरण
- युवा पीढ़ी को प्रोत्साहन
- पारम्परिक और आधुनिक पद्धतियों का समन्वय

इन उपायों से घराना परम्परा को नई दिशा और स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना परम्परा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल एक शैलीगत व्यवस्था नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परम्परा का जीवंत प्रतीक है।ऐतिहासिक दृष्टि से घरानों ने संगीत की विभिन्न शैलियों को विकसित किया और उन्हें संरक्षित किया। विभिन्न घरानों

ने अपने-अपने ढंग से संगीत को समृद्ध बनाया, जिससे यह परम्परा और अधिक व्यापक और प्रभावशाली बनी।समकालीन समय में, यद्यपि घराना परम्परा में परिवर्तन आया है, फिर भी इसकी मूल भावना आज भी जीवित है। आधुनिक कलाकार परम्परा और नवाचार के बीच संतुलन स्थापित कर रहे हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घराना परम्परा भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा है, जिसने अतीत से वर्तमान तक इसकी निरंतरता, समृद्धि और पहचान को बनाए रखा है।

सन्दर्भ सूची

भातखंडे, वि. ना. (2002). *हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति* (खंड 1–4). संगीत कार्यालय।
पलुस्कर, वि. दि. (1998). *संगीत बालप्रकाश*. गंधर्व महाविद्यालय मंडल।
देव, बी. सी. (2000). *भारतीय संगीत का परिचय*. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
व्यास, भगवतराम. (2003). *भारतीय संगीत का इतिहास*. राजकमल प्रकाशन।
मिश्र, लालमन. (2008). *भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास*. संगम प्रकाशन।
शर्मा, एस. के. (2012). *भारतीय संगीत में घराना परम्परा*. कनिष्क पब्लिशर्स।
जैन, सुषील कुमार. (2015). *भारतीय संगीत की परम्पराएँ और घराने*. राधा पब्लिकेशन्स।
त्रिपाठी, कृष्ण. (2016). *हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा*. विश्वविद्यालय प्रकाशन।